इकाई 3 - राजनीतिक भूगोल की विचारधाराएँ एवं पद्धतियाँ (Primary Schools and Methodology of Political Geography)

ईकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 राजनीतिक भूगोल की विचारधाराएँ

3.2.1. राजनीतिक भूदश्यावली सम्बन्धी विचारधारा

3.2.2. राजनीतिक पारिस्थितिकी सम्बन्धी विचारधारा

3.2.3. जीव सम्बन्धी विचारधारा

3.3. राजनीतिक भूगोल की अध्ययन पद्धति (विधि तंत्र)

3.31. सामग्री एकत्रीकरण

3.3.2 सामग्री वर्णन

3.3.3 विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 संदर्भ ग्रन्थ

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8. अभ्यासार्थ प्रश्न

3.0 उद्देश्य (Objectives)

इस ईकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेंगे :

- राजनीतिक भूगोल की विचारधाराएँ
- विचारधाराओं की प्रमुख विशेषताएं
- विचारधाराओं की मुख्य भिन्नताएँ
- राजनीतिक भूगोल के अध्ययन की पद्धतियाँ, एवं
- राजनीतिक भूगोल के तथ्य जिनका विश्लेषण सम्भव है ।

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक भूगोल वास्तव में मानव भूगोल का ही अंग है, फिर भी दोनों के अध्ययन विधियों मे पर्याप्त भिन्नता है । एक और जहाँ मानव भूगोल मानवीय क्रिया कलापों और पर्यावरण के तथ्यों के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करता है ही राजनीतिक भूगोल में राजनीतिक आधार पर संगठित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन किया जाता है । जैसा कि मूडी ने लिखा है कि धरातलीय क्षेत्र राजनीतिक ईकाई की भौगोलिक

आवश्यकता है, क्योंकि कोई भी राज्य शून्य मे बिना धरातलीय क्षेत्र के रूप में नही हो सकता और कोई भी धरातलीय क्षेत्र बिना मानव के राज्य ईकाई नहीं बन सकता!

राजनीतिक भूगोल की प्रमुख विचारधाराओं को समझने से पूर्व इसका विषय क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय बहुत आवश्यक है । राजनीतिक भूगोल एक गतिशील विषय है अर्थात दूसरे शब्दों मे हम कह सकते है कि इसकी प्रकृति परिवर्तनशील है । प्रारम्भ में राजनीतिक भूगोल राज्य के आंतरिक एवं बाह्य पक्षों ही अध्ययन करता था किन्तु बाद में विश्व के विभिन्न भागों मे राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण समय–समय पर इसमें नवीन विषय जुड़ते चले गये । आज राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संगठनों का भूगोल भी राजनीतिक भूगोल की विषय वस्तु बन गया है । ये संगठन किसी राज्य के बाह्य अन्तर सम्बन्धो पर व्यापक प्रभाव डालते है । अब तो राज्यों के आपसी सम्बन्धों के अतिरिक्त अंतरिक्ष – 'ने. भी –राजनीतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया है, इसी प्रकार पर्यावरण अपक्षरण (Environmental degradation) की भी राजनीतिक क्रियाओं को प्रभावित करने की अहम्–भूमिका रही है । बहुत से राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के पर्यावरण की कीमत पर. अपने आर्थिक विकास की पद्धति को अपनाते जा रहे है जो गम्भीर चिन्तन का विषय है अत: स्पष्ट है कि राजनीतिक भूगोल की विभिन्न विचारधाराएँ परिवर्तित राजनीतिक भूगोल की राजनीतिक एवं मानवीय क्रियाओं का परिणाम है ।

3.2 विचारधाराएँ (Principal School of Political Geography)

राजनीतिक भूगोल एक गतिशील विज्ञान होने के कारण समय समय पर इसमें विचारों में परिवर्तन आने के कारण विभिन्न विचार धाराओं का उद्भव होता रहा है ।

वास्तव में रेटजेल (1897) की राजनीतिक भूगोल के प्रकाशन से ही इसे स्वतंत्र विषय के रूप 'मे स्वीकार किया गया । प्राचीन विद्वानों ने पर्यावरण से प्रभावित होकर राजनीतिक कार्यो की विविधता के पर्यावरण की ही देन बताया । राजनीतिक भूगोल को विकसित करने मे 19वी शताब्दी में कॉन्ट, हम्बोल्ट, रिटर आदि का बहुत योगदान है । डार्विन के Origin of Species के प्रकाशन के पश्चात यह विषय भार अधिक विकसित हुआ तथा प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मन भू–राजनीति के रूप में यह विषय बहुत लोकप्रिय रहा । अमेरिकन भूगोलवेत्ताओं ने इसे पृथक संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किया ।

3.2.1 **राजनीतिक भूदृश्यावली सम्बन्धी विचारधारा** (Political Landscape School)

इसे फ्रांसिसी विचारधारा के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि सर्वप्रथम फ्रांसिसी विद्वानों ने ही राज्य का अध्ययन राजनीतिक भूदृश्यावली की व्याख्या के रूप में किया यद्यपि उनका दृष्टिकोण सीमित था। इस विचारधारा की विशेषता क्षेत्रीय दृष्टिकोण कही जा सकती है । इस विचारधारा के अनुसार राजनीतिक भूगोल का प्रमुख लक्ष्य

राज्य के राजनीतिक व सांस्कृतिक विचार का अध्ययन करना है इस विचारधारा में चार तथ्यों पर अधिक बल दिया जाता है ।

1. राज्य या क्षेत्र के क्षेत्रीय लक्षण जैसे स्थिति,विस्तार एवं आकार स्थल (क्रोड़) एवं नाभिक्षेत्र विभिन्न स्तर की प्रशासकीय ईकाईयाँ जैसे राजधानियों और उपराजनीतिक इकाइयों का पदानुक्रम अर्थात (अ) स्थानीय (ब) उप प्रान्तीय क्षेत्र (स) प्रान्त
2. आन्तरिक स्वरूप (Internal Pattern):– मानव आधारित विविधताएँ. जाति, धर्म. भाषा दल एवं राजनीतिक सम्बन्ध आदि एवं उनका वितरण एवं इनसे प्राप्त विशेषताएँ ।
3. अंतिम तथ्य (Terminal elements):– इसमें सीमाएं व स्वरूप, विविधताओं विवादास्पद क्षैत्रो सुरक्षात्मक स्थिति, सेन्यीकृत व असैनिक सीमाएं अंतिम बिन्दु आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
4. बाह्य स्वरूप (External Pattern):– इसमें अन्तर्राष्ट्रीय समूहीकरण, औपनिवेशिक स्वरूप व अन्य समझौतों को सम्मिलित किया जाता हैं । दूसरे शब्दों में राज्य के बाह्य' तथ्य के अन्तर्गत विभिन्न देशों से सम्बन्ध आर्थिक व राजनीतिक संगठनो के प्रारूप और उन प्रारूपों का राज्य से सम्बन्ध को समझा जाता है ।

उपयुक्त तथ्यों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार से है–

1. **राज्य या क्षेत्र** (Area.):– वर्तमान विश्व में प्रत्येक राजनीतिक ईकाई का सुनिश्चित क्षेत्र होता है क्योकि कोई भी क्षेत्र शून्य में बिना धरातलीय क्षेत्र के राज्य के रूप में नहीं हो सकती अर्थात बिना धरातलीय क्षेत्र के राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती । क्षेत्र की भौगोलिक, विशेषताओं के अन्तर्गत राज्य की स्थिति, आकार, विस्तार में सभी तथ्य राज्य के विस्तार एवं विकास को नियंत्रित करते है । इन तथ्यों की अनुकूलता से ही किसी राज्य की शक्ति एवं एकता निर्भर करती है । उदाहरण के लिए ग्रेटब्रिटेन की विश्व में केन्द्रीय एवं सामुद्रिक स्थिति ने ही उसे शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र बनाया जिसके साम्राज्य का कभी सूर्यास्त नहीं होता था इसी प्रकार रूस के विशाल आकार ने उसे गहनता में (Defence in depth) सुरक्षा का गुण प्रदान किया जिसके कारण यह – बाह्य आक्रमणों से अपनी सुरक्षा करने में सक्षम रहा ।

2. **आंतरिक स्वरूप** (Internal pattern) :– भूदृश्यावली सम्बन्धी विचारधारा के अनुसार किसी राज्य का आंतरिक स्वरूप एक महत्वपूर्ण तथ्य है जिसके अन्तर्गत भाषा, धर्म, जातियता राजनीतिक दल किसी राज्य को एक सूत्र में बांधते है । ये तथ्य किसी राज्य की आंतरिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए जरूरी है ।

3. **अंतिम तथ्य** (Terminal element) :– राज्य के अन्तिम तथ्य सीमाएं (Boundaries) एवं सीमान्त प्रदेश (Frontiers) होते हैं जो एक राज्य को दूसरे राज्य से पृथक करते है । इनमें सीमाओं की आकृति सीमान्त क्षेत्र तथा सीमा एवं अन्तस्थल संरचना का अध्ययन किया जाता है । किसी भी राज्य के लिए उसकी सीमाओं का सुरक्षित रहना उसके अस्तित्व के लिए एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य तथ्य है ।

4. **बाह्य स्वरूप** (External element) :– इस तथ्य में –राज्य के विभिन्न देशों से सम्बन्धों को सम्मिलित किया जाता है क्योंकि कोई भी राज्य एकाकी रूप में नहीं रह सकता विभिन्न प्रकार के सहयोग के लिए उसे अन्य राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है तथा कई प्रकार के अन्र्तराष्ट्रीय समझौते करने पड़ते है । शक्तिशाली राष्ट्र अपनी आवश्यकता पूर्ति करने के लिए उपनिवेश स्थापित कर लेते हैं ।

उपर्युक्त विचारधारा की कई विद्वानों ने यह कहकर आलोचना की कि –यह एक संकुचित विचारधारा है, 'क्योंकि इसमें राज्य के स्थाई तत्वों का तो अध्ययन किया जाता है किन्तु इसमें राज्य की राजनीतिक क्रियाओं का अध्ययन नहीं किया जाता ।

बोध प्रश्न – 1

प्रश्न:–1 राजनीतिक भूगोल में निम्न लिखित विचार किस विद्वान का कथन है?
''कोई भी राज्य शून्य में बिना धरातलीय क्षेत्र 'के राज्य के रूप में नहीं हो सकता और कोई भी धरातलीय क्षेत्र बिना मानव के राज्य ईकाई नहीं बन सकता ।''

……..

प्रश्न:–2 राजनीतिक भूगोल, भूगोल की किस शाखा से सम्बन्धित है?

……

प्रश्न:–3 राजनीतिक भूदृश्यावली सम्बन्धी विचार धारा का प्रारम्भ विश्व वे? किस देश में हुआ?

……..

प्रश्न:–4 उस विचार धारा का नाम बताइये जिसमें राज्य के राजनीतिक व सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन किया जाता है?

……

प्रश्न:–5 राज्य के क्षेत्रीय लक्षणों में प्रमुखत: किन तत्वों को सम्मिलित किया जाता है?

……..

प्रश्न–6 किसी राज्य के आंतरिक स्वरूप को समझने के लिए किन तत्वों का अध्ययन किया जाना चाहिए?

……..

3.2.2 **राजनीतिक पारिस्थितिकी सम्बन्धी विचार धारा** (Political Ecolpgy School)

इस विचार धारा का जन्म 'सर्वप्रथम अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं के द्वारा हुआ जिसमें राज्य और उसके पर्यावरणीय अन्र्तसम्बन्धों के अध्ययन को राजनीतिक भूगोल का एक महत्वपूर्ण पहलू समझा गया । इस विचारधारा के अन्तर्गत भूदृश्यावली के विपरीत राज्य की अपेक्षा मानव एवं मानव समुदाय के अध्ययन को अधिक महत्व दिया गाया तथा क्षेत्र को कम महत्व प्रदान किया गया । इसमें राज्य के मानव समूह तथा शक्ति संचय हेतु राष्ट्र के भौगोलिक क्षेत्र के बीच संसाधनों के नियोजन एवं समायोजन पर

अधिक ध्यान दिया जाता है । इस विचारधारा के अनुसार राजनीतिक भूगोल विभिन्न मानव समुदायों का अध्ययन भू–राजनीतिक (Geo - political) दृष्टिकोण से करता है । इस विचारधारा को समझने के लिए निम्न लिखित पांच तथ्यों को समझना होगा ।

(1) **मानव समूह** (Human groups)

1. मानव की उत्पति एवं विकास
2. जातीय स्वरूप
3. निवास क्षेत्र (Habitat) इसे पारिस्थितिकी भी कह सकते है, जिसमें स्थिति, विस्तार. संसाधन, और क्षैत्रिय विस्तार का अध्ययन करते है ।

(2) **मानव समुदाय के पोषण हेतु अर्थव्यवस्था** (Economy of human groups)

संसाधन विदोहन का स्वरूप एवं उसके विविध पक्ष

(अ) उद्योग एवं संसाधन (ब) संसाधन बहुलता एवं अभाव

(स) संरक्षण (द) संसाधनों का व्यापार अर्थात संसाधन विनिमय

(3) **मानव समुदाय का राजनीतिक संगठन** (Political organisation of human groups)

इसे प्रशासनिक स्वरूप भी कह सकते है जिसमें निम्नलिखित व्यवस्थाएँ होती है–

1. राष्ट्रीय सरकार व्यवस्था
2. प्रदेशीय सरकार व्यवस्था
3. स्थानीय सरकार व्यवस्था

(4) **सीमा प्रबन्ध** (Boundary management)

1. सीमा निर्धारण
2. सीमांकन
3. सीमा सम्बन्धी समस्याएँ अथवा विवादास्पद बिन्दु
4. वातावरण के तत्वों के साथ अर्न्तसम्बन्ध

(5) **राज्य का बाह्य सामंजस्य** (External adjustment)

1. अर्न्तराष्ट्रीय प्रशासनिक समझौते
2. अन्य राष्ट्रीय समझौते
3. विस्तारित क्रियाएँ

(अ) शांति योजना (ब) व्यापार कार्यक्रम (स) युद्ध सम्बन्धी योजना (द) अन्य

उपर्युक्त तथ्यों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है ।

(1) **मानव समूह** : के विभिन्न भागों मे विभिन्न प्रकार के मानव समूह पाये जाते है ये मानव समुदाय राज्य के अंग कहलाते है अत: मानव अथवा जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं जैसे जनसंख्या वृद्धि. वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, ग्रामीण–शहरी,

साक्षरता आदि का अध्ययन राज्य के भौगोलिक स्वरुप को समझने के लिए आवश्यक है । जहाँ एक ओर किसी भी क्षेत्र की स्थिति विस्तार के अध्ययन के साथ दूसरी ओर मानव समुदाय के जन्म और जातिगत लक्षणों का अध्ययन किया जाता है

(2) **मानव समुदाय के पोषण हेतु अर्थव्यवस्था** : किसी भी राज्य की आर्थिक उन्नति का आधार संसाधन विदोहन की मात्रा एवं स्तर पर निर्भर करता है । विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के संचालन हेतु संसाधनों की; उपलब्धता, मात्रा एवं उनके उपयोग की तकनीक की आवश्यकता होती है जिनके सहयोग से मानव समुदाय विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के माध्यम से राज्य के विकास में सहायक सिद्ध होते है । इस विचार के अनुसार राज्य की प्रगति के लिए मानव समुदाय नवीन संसाधनों की खोज करता है । अत: किसी राज्य की आर्थिक प्रगति में प्राकृतिक संसाधन एवं मानवीय प्रयत्न दोनों का ही समान महत्व होता

(3) **मानव समुदाय का राजनीतिक संगठन** : किसी भी सुनियोजित संगठन में प्रशासकीय पदानुक्रम होता है जिसके आधार पर राज्य की प्रशासनिक क्रियाएँ सम्पादित होती है । इस व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय सरकार, प्रान्तीय सरकार एवं अन्य उप विभाग जैसे जिला, तहसील, नगरपालिका आदि को सम्मिलित किया जाता है ।

(4) **सीमा प्रबन्ध** : सुरक्षा की दृष्टि से राज्य मे सीमाएं एवं सीमान्त का विशेष महत्व होता हैं । सीमाओं का निर्धारण एवं उसके मापदण्ड सीमा विवाद के विभिन्न कारण एवं निदान, सीमाओं का प्राकृतिक तत्वों के साथ अर्न्तसम्बन्ध का अध्ययन राजनीतिक भूगोल का एक मूल लक्ष्य है

(5) **राज्य का बाह्य सामंजस्य** : राज्य की विश्व में क्या स्थिति है? इस बात को जानने के लिए यह जानना आवश्यक है कि राज्य के बाहरी समझोतों का क्या स्वरूप है । अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासनिक संगठन एवं योजना (युद्ध एवं शान्तिकाल में) का बोध भी बाह्य सामंजस्य के द्वारा ही होता है ।

बोध प्रशन–2

प्रशन 1. पारिस्थितिकी सम्बन्धी विचार का जन्म किस देश से हुआ ?

.....

प्रशन 2. पारिस्थितिकी विचारधारा में भूदृश्यावली के विपरीत किस बात पर अधिक बल दिया गया है ?

.....

प्रशन 3. पारिस्थितिकी शब्द विज्ञान की किस भाषा से संबन्धित है ?

.....

प्रशन 4. पारिस्थितिकी विचारधारा के अनुसार राजनीतिक मानव समुदाय का अध्ययन किस दृष्टिकोण से करता है ?

.....

प्रशन 5. पारिस्थितिकी विचारधारा मे राज्य का बाहरी समायोज किस प्रकार होता है?

प्रशन 6. राज्य का आर्थिक उन्नति का आधार किस तथ्य पर आधारित होता है?

.....

3.2.3 **जीव सम्बन्धी विचारधारा** (Organismic School)

इस विचारधारा को जर्मन विचारधारा के नाम से भी जाना जाता हे क्योकि 1896 में सर्वप्रथम जर्मन भूगोलवेता केजेलन ने इसे भूराजनीति (Geopolitics) नाम दिया । भूराजनीति में एक जर्मन भाषा मे एक शब्द लेबन्सराम का उल्लेख है जिसका अर्थ होता है निर्वाह क्षेत्र या जीने के लिए क्षेत्र । प्रत्येक राज्य अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक लेबेन्साराम की आकांक्षा रखता है अर्थात विस्तार की प्रवृति रखता है इसलिए क्षेत्र इसे विस्तारवादी विचारधारा कहें तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । कालान्तर में जर्मन भूराजनीतिज्ञ कार्ल हाशोफर ने इस विचारधारा को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया । केजेलन ने राज्य को एक जीव के रुप में सक्रिय तत्व स्वीकार किया । उसने जीवसम्बन्धी विचारधारा को बहुत सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत किया है उन्होने लिखा है–'राज्य एक जीवित प्राणी है, जिसका शरीर श्रेणी स्थान से निर्मित है, सीमाएं राज्य का अन्तिम अवयव है, उत्पादन क्षेत्र उसकी मांस पेशियाँ है, सड़क, **रेल** एवं जल मार्ग रक्त वाहिनी प्रणाली है तथा प्रशासकीय राजधानी उसका मस्तिष्क, हृदय और फेफेड़ है ।

"The state is a Living orgamsm whose body consist of territorial space , that the boundaries are the end organs of the state , the producing regions are its limls that road railways and waterways are the circulatory systems and that the administrative capital is its brain , heart and lungs."

इस विचारधारा के प्रमुख आधार बिन्दु निम्नलिखित है ।

1. **क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताएं** (Physical characteristics of the area)
   1. स्थिति, प्रवेश्यता एवं सामरिक विशेषता
   2. विस्तार
   3. आकार
   4. उच्चावच
   5. प्राकृतिक संसाधन
2. **मानव या प्रजा** (People)
   1. प्रजाति एवं प्रजाति समूह
   2. जनसंख्या–मात्रा, एवं घनत्व
   3. संस्कृति–मौलिकता, शिक्षा, तकनीक
   4. अर्थव्यवस्था–उद्योग परिवहन एवं व्यापार, उत्पादन एवं उत्पादनशीलता, जीवन स्तर

5 सरकार

3. **राज्य के अंग** (The anatomy of the political area)
   (1) राजधानी (2) केन्द्रीय क्षेत्र (3) विस्तार क्षेत्र (4) सीमाएं
   (5) तटस्थ क्षेत्र (6) उपनिवेश एवं भूमि, समुद्र तथा वायुमण्डल में 1विस्तृत अधिकार क्षेत्र
4. **राज्य एवं जनसंख्या के संयुक्त अंग** (The integrated population area organism)

उपर्युक्त तथ्यों का संक्षिप्त वर्णन निम्नानुसार प्रस्तुत है ।

1. **क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषतायें** राज्य के प्राकृतिक स्वरूप में स्थिति, आकार एवं विस्तार का अध्ययन राज्य की सुरक्षा, सामरिक कौशल, भेधता, प्रवेश्यता की दृष्टि से आवश्यक है । इसी प्रकार गहनता एवं प्रतिरक्षा की दृष्टि से आकार, भेधता की दृष्टि से आकृति, पहुँच की दृष्टि से धरातलीय विशेषताएं तथा प्राकृतिक संसाधनों को सम्मिलित किया जाता है । उच्चावच, प्रवाह प्रणाली, तटरेखा आदि के साथ क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधन जैसे– खनिज, वन, मिट्टी आदि के उत्पादन एवं वितरण का अध्ययन किया जाता है ।

2. **जनसंख्या** : जीवसम्बन्धी विचारधारा में मानव समूह एवं भौगोलिक क्षेत्र!, के मध्य समायोजन का विचार होने के कारण जनसंख्या का विभिन्न पहलुओं का अध्ययन आवश्यक हो जाता है । जैसे सांस्कृतिक पर्यावरण, जनसंख्या वितरण (ग्रामीण एवं नगरीय) जातियता आर्थिक दशाओं तकनीकी ज्ञान सरकारी नीति आदि का भी अध्ययन किया जाता है ।

3. **राज्य के अंग** : इस विचारधारा में चूंकि राज्य को एक जीवित ईकाई माना गया है अत: राज्य के विभिन्न क्षेत्रों को शरीर के विभिन्न अंगो की भाँति नाम दिया गया है । शरीर के संचालन के लिए प्रत्येक छोटे बड़े अंग का अपना विशिष्ट महत्व होता है तथा एक अंग दूसरे अंग से पूर्ण रुप से जुड़ा रहता है अर्थात एक अंग की कार्यकुशलता दूसरे अंग के सहयोग पर निर्भर करती है दूसरे शब्दों में एक अंग दूसरे अंग का पूरक होता है । राज्य के अंगो में राजधानी, नाभकीय क्षेत्र, यातायात के साधन सीमाएँ प्रशासनिक विभाग उपनिवेश विस्तारित क्षेत्र आदि का शासन तंत्र में महत्व होता है और किसी राज्य की प्रगति एवं कार्यकुशलता इन्ही अंगो पर निर्भर करती है ।

4. **राज्य एवं जनसंख्या के संयुक्त अंग** : जिस प्रकार शरीर में शारीरिक एवं मानसिक गतिविधियों से ही स्वस्थ शरीर का विकास सम्भव है । उसी प्रकार किसी राज्य के सफल संचालन में क्षेत्रीय तत्वों के साथ जनसंख्या के गुणात्मक विकास और उनसे सम्बन्धित समस्याओं और उनसे निराकरण के ' उपायो का अध्ययन किया जाता है तथा राज्य की सीमाएं और उनका विस्तार राष्ट्रीय सुरक्षा विदेश नीति आदि का राज्य के क्षेत्रीय अंगो के रुप में अध्ययन किया जाता है ।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि राजनीतिक भूगोल में यद्यपि विभिन्न विचारधाराएं प्रचलित है जिनका अध्ययन पद्धतियों में मिलता है किन्तु समग्र रुप में इनका उद्देश्य राज्य का भौगोलिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करना है ।

बोध प्रश्न 3

प्रश्न 1. राजनीतिक भूगोल में जर्मन राजनीतिक विचारधारा का सम्बन्ध किस भौगोलिक तत्व से है?

……

प्रश्न 2. लेबन्स्राम शब्द किस भाषा का है और इसका क्या अभिप्राय है?

……

प्रश्न 3. जीव सम्बन्धी विचारधारा में प्रशासनिक राजधानी की तुलना शरीर के किस अंग से की गई है?

……

प्रश्न 4. क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताओं के अन्तर्गत किन किन तत्वों की सम्मिलित किया जाता है?

……

प्रश्न 5. जीव सम्बन्धी विचारधारा को सर्वप्रथम प्रतिपादित करने का श्रेय निम्नलिखित विद्वानों मे किस को जाता है?

1 स्पाइक मैन 2. रेटजेल

3. कार्ल हा शोफर 4. मेकिन्डर

……

प्रश्न6. उस जर्मन भूगोल वेत्ता का नाम बताइये जिसने जीव सम्बंधी विचारधारा को व्यावहारिक रुप प्रदान किया?

……

3.3 राजनीतिक भूगोल की अध्ययन पद्धति (विधि तंत्र) (Methodology)

भूगोल में प्राकृतिक एवं मानवीय घटनाओं के सम्मिलित अध्ययन के कारण इसकी विषय वस्तु थोड़ी जटिल हो गई है अत: सामान्य विधि तंत्र के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट शाखाओं जैसे आर्थिक भूगोल, नगरीय भूगोल, सामाजिक भूगोल एवं राजनीतिक भूगोल आदि के विधिवत अध्ययन के लिए कुछ अध्ययन पद्धतियाँ विकसित की गई है। भूगोल की अन्य शाखाओं की भांति राजनीतिक भूगोल में भी कुछ शोध प्रक्रिया को अपनाया गया है । यद्यपि इस क्षेत्र में अभी बहुत कम प्रयास किया गया है । अधिकांश विधियाँ परिमाणात्मक विश्लेषण पर अधिक बल देती है जिनका राजनीतिक

भूगोल की, दृष्टि से महत्व है । प्रेसकॉट ने अपनी पुस्तक Political Geography में राइट, पोण्डस डी ब्लीज आदि की पद्धतियों पर प्रकाश डाला है ।

राजनीतिक भूगोल के अध्ययन की पद्धति भूगोल की अन्य पद्धतियों से इस रूप से भिन्न है कि इसमें वस्तुनिष्ठता व उद्देश्यात्मकता की स्पष्टता पर अधिक जोर दिया गया है । दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि राजनीतिक भूगोल में भावात्मकता का कोई स्थान नहीं है । विचारधारा में निष्पक्षता आवश्यक है किसी विशेष विचारधारा से प्रभावित अध्ययन विषय की प्रमाणिकता में संदेहास्पद स्थिति उत्पन्न कर सकता है । राजनीतिक भूगोल का अध्ययन एवं शोधकार्य निम्नलिखित विधिक्रम से किया जा सकता है ।

प्रथम:– अध्ययन क्षेत्र का सिंहवालोकन अथवा क्षेत्रीय अवलोकन (Field observation) एवं तथ्यों का एकत्रीकरण, विषय की प्रकृति को स्पष्ट करने हेतु विषय की सामग्री को एकत्रित करना ।

द्वितीय:– प्राप्त सामग्री को व्यवस्थित कर उसका एकत्रीकरण, विश्लेषण एवं वर्णन करना ।

3.3.1 **सामग्री का एकत्रीकरण** :

किसी भी राजनीतिक विषय को समझने के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाएं, तथ्य व आकरों की आवश्यकता होती है । इन सूचनाओं की प्रकृति एवं प्रकार विषय की आवश्यकता पर निर्भर करता है । अध्ययन कर्ता को विषय के चुनाव के बाद उसके अनुरूप आकड़ों और तथ्यों की जानकारी का स्त्रोत ज्ञात होना चाहिए । उदाहरण के लिए यदि सीमा–विवाद का अध्ययन करना है तो अमूक देशों की सीमाओं की प्रकृति के साथ समय–समय पर हुए समझौते, सरकारी दस्तावेज के चीज व्यक्तिगत विवरण मानचित्र की उपलब्धता, पत्र–पत्रिकाएं, विज्ञप्तियाँ, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विवरण, क्षेत्रीय निरीक्षण आदि अनिवार्य है । क्षेत्रीय निरीक्षण में सम्बन्धित व्यक्तियों से साक्षातकार के आधार पर सूचनाएँ एकत्रित की जाती है । निर्वाचन भूगोल में तो व्यक्तिगत सूचनाओं के लिए घर–घर जाकर साक्षातकार कर सम्पर्क करना पड़ता है । इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण की नवीनतम पद्धतियाँ जैसे– वायु छाया चित्र व दूरसंवेदन आदि तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) विधि का उपयोग भी लाभकारी सिद्ध हुआ है । लिखित सूचनाओं में सरकारी पुरातत्व विभाग, पूर्वज्ञान का अनुभव प्रशासनिक पत्राचार आदि का भी योगदान रहता है ।

3.3.2 **एकत्रित सामग्री का वर्णन** :

एतिहासिक रूप से भूगोल सदैव से ही वर्णात्मक शैली में विकसित होता रहा है। कई भूगोलवेत्ताओं ने अपने यात्रा वृतान्त और भौगोलिक दृश्यावलोकन को बहुत ही रोचक, सूचनापूर्ण एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है । मानचित्र और रेखाचित्रों के माध्यम से अधिक स्पष्ट और ग्राह्य हो जाता है । राजनीतिक भूगोल में भी मानचित्रों

और रेखाचित्रों का उपयोग किया जाता ' है । वर्णन का: राजनीतिक भूगोल में अधिक महत्व इसलिए है कि इसके द्वारा वर्गीकरण किया जा सकता है । राज्य, सीमा, राजधानी, सरकार आदि अनेक विषयों में वर्गीकरण के आधार पर तथ्यों की प्रकृति को समझा जा सकता है ।

3.3.3 **विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण** :

भूगोल में शोध प्रक्रिया में जिन चार स्वरूपों को विश्लेषण हेतु अपनाया जाता है वे निम्नलिखित है ।

1. मानचित्र करण (Cartorgraphic) ।
2. परम्परागत (Classical)
3. तुलनात्मक (Comparative)
4. गणितीय (Mathematical)

उपर्युक्त सभी तथ्य विषय के स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक है । अन्य विषयों की भाँति भूगोल में भी आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रो में इन समस्याओं आदि की प्रामाणिकता के लिए गणितीय एवं सांख्यिकीय पद्धतियों का सहारा लिया गया, फिर भी कई विद्वान राजनीतिक भूगोल में गणितीय विधि का विरोध करते रहे है । एव सर्वेक्षण के आधार पर प्रेसकॉट ने उन विषयों का उल्लेख किया है जिनका अध्ययन गणित के आधार पर किया जा सकता है । ये निम्नलिखित है

राजनीतिक भूगोल के तथ्य जिनका गणितीय विश्लेषण सम्भव है ।

सीमाएँ : (1) लम्बाई (2) पार करने वाले सरकारी केन्द्रों की संख्या (3) सीमा पार व्यापार (4) सीमांकन का साधन (5) समयावधि (6) तटस्थ क्षेत्र की चौड़ाई ।

राष्ट्रीय राजधानी : (1) जनसंख्या (2) नियोजन स्वरूप (3) वास्तविक तथा सापेक्षित स्थिति (4) समयावधि (5) संरचना पर सरकारी व्यय ।

आंतरिक प्रशासनिक विभाग : (1) विभागों के प्रकार एवं संख्या (2) आंतरिक सीमाओं की लम्बाई (3) क्षेत्र (4) जनसंख्या (5) बजट (6) आर्थिक उत्पादन की प्रकृति ।

निर्वाचन : इस क्षेत्र में गणितीय विश्लेषण विशेष रूप से सार्थक है, क्योंकि इसमें मतदाताओं कि वास्तविक संख्या, निर्वाचन केन्द्रों की संख्या, उम्मीदवारों की संख्या, प्रत्येक उम्मीदवार को प्राप्त मतों की संख्या आदि ऐसे तथ्य है जिन्हें सही रूप में गिना जा सकता है ।

क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था : उद्योगों के उत्पादन की मात्रा प्रकृति एवं वितरण, सामान्य पूँजी एवं मानव का प्रवाह, जनसंख्या के विविध आयाम जैसे जनसंख्या वृद्धि, संरचना, वितरण लिंगानुपात ।

राजनीतिक आचरण : इसमें उम्मीदवार एवं मतदाता दोनो की ही प्रवृतियों के आधार पर उनके व्यवहार का आकलन किया जाता है ।

अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य: इसमें व्यापार की स्थिति, अनुदान एवं सहायता, विभिन्न संगठनों से प्रतिबद्धता, पूँजीप्रवाह स्थानान्तरण हेतु विभिन्न यातायात के साधनो की संख्या जैसे– रेल, जलयान, वायुयान व अन्य वाहनो की संख्या आदि को सम्मिलित किया जाता है ।

सामरिक सम्बन्धों: इसके अन्तर्गत राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से विभिन्न राजनीतिक संगठनों, दूतावास, राष्ट्राध्यक्षों का आगमन सेना के आधार केन्द्र शरणार्थी का आवागमन आदि ।

राजनीतिक भूगोल में भी अन्य विषयों की भाँति गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रचलन बढ़ा है किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से कई बार इन विधियों के आधार पर लक्षित परिणाम अशुद्ध एवं विपरीत भी सिद्ध हो सकते है अत: इनका प्रयोग विशेषकर परिमाणात्मक विश्लेषण का प्रयोग बहुत सोच समझकर ही किया जाना चाहिए । भूगोल की अन्य शाखाओं की भाँति राजनीतिक भूगोल में भी गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग सीमित मात्रा में ही किया जाना चाहिए । विषय की प्रकृति की दृष्टि से गणितीय प्रयोग की अपेक्षा आलोचनात्मक विश्लेषण एवं तुलनात्मक विवेचन पर ही अधिक बल दिया जाना चाहिए ।

3.4 सारांश (Summary)

सारांश रुप में कहा जा सकता है कि मानव के विविध कार्यो की तरह राजनीतिक कार्य भी उसकी राजनीतिक इच्छा अथवा विचारधारा का परिणाम है अर्थात् राजनीतिक भूगोल को भी हम मानव भूगोल की एक शाखा कह सकते है । राजनीतिक भूगोल एक गतिशील है राजनीतिक प्रक्रिया और विविध घटनाएं परिवर्तनशील है अत: राजनीतिक भूगोल में समय समय विभिन्न विचारधाराओं का प्रादृभाव होता रहा है । राजनीतिक भूगोल के क्षेत्र में प्रमुख रुप से तीन विचारधाराएँ प्रचलित है ।

राजनीतिक भू दृश्यावली विचारधारा का विकास सर्वप्रथम फ्रांसिसी द्वारा किया गया जिसमें चार बातों पर बल दिया गया– पहली राज्य के क्षेत्रीय लक्षण, दूसरी राज्य का आंतरिक स्वरुप, तीसरी अन्तिम तथ्य तथा चौथी राज्य का बाह्य स्वरुप ।

कुछ विद्वानों ने इस विचारधारा को संकुचित बताते हुए इसकी आलोचना की क्योकि इससे राज्य के स्थाई तत्वों का अध्ययन नही किया जाता है । राज्य और उसके ,पर्यावरणीय अर्न्तसम्बन्धों के आधार पर अमेरिका में राजनीतिक पारिस्थितिक की विचारधारा का प्रारम्भ हुआ जिसमें राज्य की अपेक्षा मानव एवं मानव समुदाय के अध्ययन को अधिक महत्व दिया गया । इस विचारधारा का उद्देश्य मानव समुदाय का अध्ययन भू–राजनीतिक के आधार पर करना था । इससे मानव समूह उसकी उत्पति विकास जातियता निवास क्षेत्र के साथ उसकी पोषण हेतू अर्थव्यवस्था संसाधन विदोहन का अध्ययन करना भी लक्ष्य रहा तथा राजनीतिक संगठन सरकार व्यवस्था, सीमा प्रबन्ध और राज्य का बाह्य सामंजस्य हेतु विभिन्न राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय समझौतों का अध्ययन करना भी रहा ।

राजनीतिक भूगोल के क्षेत्र में जर्मन विचारधारा को जीव सम्बंधी विचारधारा के नाम से जाना जाता है । इस विचारधारा का प्रतिपादन यद्यपि सर्वप्रथम फ्रेडरिक रेटजेल ने किया था किन्तु स्वीडेन के भूगोलवेता केजेलन ने इसे भू राजनीति के रुप में विकसित किया । इस विचारधारा में निर्वाह क्षेत्र पर बल दिया जाता है । इसमें राज्य को एक जीवित ईकाई स्वीकार किया गया है तथा राज्य के विभिन्न भागों की तुलना शरीर के विभिन्न अंगो से की गई है जैसे राजधानी को शरीर का महत्वपूर्ण अंग मस्तिष्क बताया है जहाँ से सभी गतिविधियाँ संचालित होती है । इस विचारधारा में क्षेत्र भी. प्राकृतिक विशेषताओं के साथ मानव अथवा जनसंख्या का विभिन्न पहलुओं के रुप में अध्ययन किया जाता है । इसी प्रकार राज्य के अंग तथा राज्य तथा जनसंख्या के संयुक्त अंगो का भी अध्ययन किया जाता है ।

राजनीतिक भूगोल में विभिन्न विचारधाराओं के कारण इसकी अध्ययन की पद्धति में भी विशिष्टता पाई जाती है । विधि तंत्र के अन्तर्गत इसके अध्ययन को अधिक व्यावहारिक और ग्राहय बनाने हेतु शोध प्रकिया की पद्धतियों को अपनाया जाता है । इस विचारधारा में क्षेत्रीय सिंहावलोकन तथ्य एकत्रीकरण, आँकड़ो एवं सूचनाओं का परिमार्जन, मानचित्र करण, वायु छायाचित्र व दूर संवेदन तकनीक के प्रयोग से आँकड़ो की वैधता एवं विश्वसनीयता का परखा जाता है तथा उन तथ्यों के आधार पर वर्णन एवं विश्लेषण किया जाता है ।

राजनीतिक भूगोल में कुछ तथ्य ऐसे है जिनका परिमाणात्मक विधि से सही विश्लेषण किया जा सकता है तथा गणित की सहायता से उन्हे अधिक सही रुप में प्रस्तुत किया जा सकता है जैसे सीमाएं, राष्ट्रीय राजधानी, आंतरिक प्रशासन व्यवस्था, निर्वाचन, राजनीतिक ईकाई का आर्थिक स्वरुप, जनसंख्या, अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध, राजनीतिक व सामरिक सम्बन्ध आदि विधियों का राजनीतिक भूगोल में यद्यपि गणित और सांख्यिकीय प्रयोग बढ़ा है किन्तु आज भी आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति का ही महत्व सर्वाधिक है ।

3.5 शब्दावली (Glossary)

कोड स्थल (Core area) मध्यवर्ती स्थिति या नामकीय क्षेत्र ।

नाभि क्षेत्र (Nuclei) भौतिक शास्त्र का शब्द जिसका अर्ध केंद्र की स्थिति।

पदानुक्रम (Hierarchy) श्रेणी के आधार पर एक व्यवस्थित क्रम ।

सीमान्त Frontiers दो सीमा रेखाओं के बीच का सामान्य क्षेत्र यह रेखा न होकर क्षेत्र होता है ।

पारिस्थितिकी (Ecology) यह वनस्पति शास्त्र से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ है जीव के चारों ओर का पर्यावरण ।

निवास क्षेत्र (Habitat) जीव के चारों ओर का परिवेश ।

विदोहन (Exploitation) किसी वस्तु को व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग में लेना ।

लेबन्स्राम (Labensurm) जर्मन भाषा का शब्द जिसका अर्थ है व्यक्ति के निर्वाह के लिए

क्षेत्र ।

अंग (Anatomy) शरीर के विभिन्न अवयव ।

परिमाणात्मक विश्लेषण विधि: वह पद्धति जिसमें किसी वस्तु की मात्रा के आधार पर विश्लेषण किया जाता है ।.

3.6 संदर्भ ग्रंथ

1. ए०एन0 भट्टाचार्य एस०एल अच्छा	राजनीतिक भूगोल	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. हरिमोहन सक्सेना	राजनीतिक भूगोल	रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ
3. पी0आर0चौहान	राजनीतिक भूगोल	वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर
4. Dixit, R.D.	Political Geography	Tata McGraw Hill.
5. Adhikari,S.	Political Geography	Rawat Pub.,Jaipur
6. Alexander,L.M.	World Political Patterns London	John Patterns Murrey
7. Moodie,AE.	Geography Behind Political	Hutehinbson London
8. एस०एम० जैन	भौगोलिक चिन्तन एंव, विधि तंत्र	साहित्य भवन आगरा

3.7 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न– 1

प्रश्न 1. ए.ई.मूडी

प्रश्न 2. मानव भूगोल

प्रश्न 3. फ्रान्स

प्रश्न 4. राजनीतिक भू दृश्यावली विचारधारा ।

प्रश्न 5. स्थिति, विस्तार, आकार, केन्द्रीय स्थल. नाभि क्षेत्र राजधानी ।

प्रश्न 6. जाति, धर्म, भाषा, दल एवं राजनीतिक संबंध ।

बोध प्रश्न–2

प्रश्न 1. अमेरिका में सर्वप्रथम परिस्थितिकी विचारधारा का जन्म हुआ !?

प्रश्न 2. क्षेत्र की अपेक्षा मानव समुदाय को अधिक महत्व दिया गया ।

प्रश्न 3. पारिस्थितिकी शब्द प्राकृतिक विज्ञान की वनस्पति शास्त्र से सम्बन्धित है ।

प्रश्न 4. इस विचारधारा में मानव समुदाय का अध्ययन भूराजनीतिक Geopolitical) दृष्टिकोण से किया जाता है । ।

प्रश्न 5. युद्ध एवं शांतिकाल में अर्न्तराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय समझौतो के द्वारा ।

प्रश्न 6. राज्य की आर्थिक उन्नति का आधार संसाधन की मात्रा एवं ' विदोहन के स्तर पर आधारित होता है ।

बोध प्रश्न–3

प्रश्न 1. जर्मन राजनीतिक विचार धारा का सम्बन्ध भूगोल के पारिस्थितिकी तत्व से है।

प्रश्न 2. यह जर्मन भाषा का शब्द है । इसका अभिप्राय निर्वाह क्षेत्र (space to live) से है ।

प्रश्न 3. प्रशासनिक राजधानी की तुलना शरीर के मस्तिष्क से की गई 'है ।

प्रश्न 4. क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताओं के अन्तर्गत स्थिति पहुँच सामरिक विशेषता, विस्तार, आकार उच्चस्थ प्राकृतिक संसाधन आदि को सम्मिलित किया जाता है ।

प्रश्न 5. जीवसम्बन्धी विचारधारा के सर्वप्रथम प्रतिपादन का श्रेय जर्मन विद्वान फ्रेडरिक रेटजेल को है ।

प्रश्न 6. जर्मन भूराजनीतिज्ञ कार्ल हाशोफर ने जीवसम्बन्धी विचारधारा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया ।

3.8 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्रश्न 1. राजनीतिक भूगोल की प्रमुख विचार धाराओं पर एक लेख लिखिए।

प्रश्न 2. राजनीतिक भूदृश्यावली विचार धारा एवं राजनीतिक, विचारधारा की परस्पर तुलना कीजिए ।

प्रश्न 3. राज्य को राजनीतिक जीव सम्बन्धी विचारधारा की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए ।

प्रश्न 4. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

(क) राज्य की बाह्य व्यवस्था (ख) मानव समुदाय की आर्थिक व्यवस्था

(ग) जनसंख्या अध्ययन के विभिन्न पहलू

प्रश्न 5. राजनीतिक भूगोल की, अध्ययन प्रक्रिया की पद्धतियों का वर्णन कीजिए।